UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 14 अब्दुर्रहीम खानखाना (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

रहीम का जन्म लाहौर में सन् 1556 ई० में हुआ। जब ये पाँच वर्ष के ही थे, तभी इनके पिता बैरमखाँ की हत्या कर दी गई। अकबर ने इनकी देखभाल राजकुमारों की तरह की और इन्हें मिर्जा खाँ की उपाधि दी। रहीम ने अरबी, फारसी, तुर्की, गणित, तर्कशास्त्र और संस्कृत का अध्ययन किया। अकबर इन्हें अत्यधिक पसन्द करते थे। ये अकबर के नवरत्नों में से एक थे। अकबर के संरक्षण से रहीम में उदारता और दानशीलता के गुण आ गए। कविता करना इनका पैतृक गुण था। इसके अलावा राज्य संचालन, वीरता और दूरदर्शिता भी इन्हें पैतृक रूप में मिली।
सन् 1576 ई० में अकबर ने इन्हें गुजरात का सूबेदार बनाया। अकबर ने रहीम को अट्ठाईस वर्ष की उम्र में खानखाना की उपाधि दी। अब रहीम का पूरा नाम मिर्जा खाँ अब्दुर्रहीम खानखाना हो गया। सेनापति और राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ रहीम उच्चकोटि के कवि भी थे। यह काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग था। रहीम ने ब्रजभाषा, अवधी तथी खड़ी बोली में रचनाएँ कीं। इनकी प्रमुख रचनाएँ रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, राम पंचाध्यायी, श्रृंगार सोरठ, मदनाष्टक तथा खेल कौतुक हैं। रहीम की कविता नीति और ज्ञान से परिपूर्ण है। इनके नीतिपूरक दोहों में जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।
रहीम ने सामाजिक कुरीतियों और आडम्बरों की आलोचना की। इन्होंने राम, रहीम को एक माना। धर्म, सम्प्रदाय के चक्कर से दूर इन्होंने मानवधर्म को परमधर्म माना। इन्होंने राम, सरस्वती, गणेश, कृष्ण, सूर्य, शिव-पार्वती, हनुमान और गंगा की स्तुति की। सन् 1605 ई० में अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर ने इन पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर इनकी सम्पत्ति जब्त कर ली। दुखी होकर ये चित्रकूट आ गए। इनके अन्तिम दिन संघर्षपूर्ण रहे। सन् 1628 ई० में इनकी मृत्यु हो गई।

https://www.evidyarthi.in/